–उपासना

डाक्टर साहब बुहत दर्द हो रहा है ।
जोड़–जोड़ में मवाद भरा है। धीरे–धीरे आराम हो जायेगा। पहले से आराम तो है ना ।
जी डाक्टर है तो पर पापा मंदिर नही जा पा रहे है ।
मंदिर जाने की फिक्र स्वास्थ की फिक्र नही ।
मंदिर जाना भी तो जरूरी है ।
क्या खास मंदिर–मस्जिद में है ।
भंगवान खुदा है ।
ये बड़ी–बड़ी ईंट–पत्थरों की इमारते नही थी तो क्या भगवान नही थे। भगवान तो हर जगह है। भगवान कौन से मंदिर गये थे।खुदा कौन सी मस्जिद गये थे। ईसा कौन से चर्च गये थे। मंदिर मस्जिद के नाम पर फंसाद–बंटवारा अच्छा तो नहीं । आस्था खूब प्रज्जवलित करो मानवीय हित के लिये धर्मान्धता के लिये नहीं।
समझ गया डाक्टर साहब ।
क्या.....
ऐसी उपासना जो नर को परमार्थी बना दे । नन्दलाल भारती 24.12.2011